शिव जी द्वारा श्री रघुबीर जी की स्तुति

जय राम रमारमणं समनं ।
भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस विभो ।
सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥

दस सीस बिनासन बीस भुजा ।
कृत दूरी महा माहि भूरी रुजा ।
रजनीचर बृंद पतंग रहे ।
सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥

महि मंडल मंडन चारूतरं ।
धृत सायक चाप निषंग बरं ।
मद मोह महा ममता रजनी ।
तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥

मनजात किरात निपात किए ।
मृग लोग कुभोग सरेन हिए ।
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे ।
विषया बन पाँवर भूली परे ॥

बाहु रोग बियोगन्हि लोग हए ।
भवदंघ्री निरादर के फल ए ।

भव सिंधु अगाध परे नर ते ।
पद पंकज प्रेम न जे करते ॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीँ ।
जिन्ह के पद पंकज प्रीती नहीं ।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें ।
प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥

नहीं राग न लोभ न मान मदा ।
तिन्ह कें सम वैभव वा विपदा ।
एहि ते तव सेवक होत मुदा ।
मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ ।
पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ।
सम मानी निरादर आदरही ।
सब संत सुखी बिचरंति महि ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे ।
रघुवीर महा रनधीर अजे ।
तव नाम जपामि नमामि हरी ।
भव रोग महागद मान अरी ॥

गुन सील कृपा परमायतनं ।
प्रनमामि निरंतर श्रीरमणं।
रघुनंदन निकंदय द्वन्दधनं ।
महि पाल बिलोकय दीन जनं ॥

बार बार बर मांगऊ
हरिषि देहु श्रीरंग ।

पदसरोज अनपायनी
भगति सदा सतसंग ॥

बरनी उमापति राम गुन
हरषि गए कैलास ।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए
सब बिधि सुखप्रद बास ॥

संकलन आभार :ज्योति नारायण पाठक

Source: https://www.bharattemples.com/shiv-ji-dwara-shree-raghuveer-ji-ki-stuti/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw